



Mr.RITMAY

01 Oct 2019

07:22 AM

Patna

Model: Web-MyKundli

Order No: 120349201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 01/10/2019
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 07:22:00 घंटे
इष्ट _____: 04:11:42 घटी
स्थान _____: Patna
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:37:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:10:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:32:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:10:09 घंटे
साम्पातिक काल _____: 08:10:52 घंटे
सूर्योदय _____: 05:41:19 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:36:21 घंटे
दिनमान _____: 11:55:02 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 13:28:31 कन्या
लग्न के अंश _____: 05:10:56 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: स्वाति - 3
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: वैधृति
करण _____: गर
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: रो-रोहित
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1941	आश्विन	9
पंजाबी	संवत : 2076	आश्विन	15
बंगाली	सन् : 1426	आश्विन	14
तमिल	संवत : 2076	पुरुटासी	15
केरल	कोल्लम : 1195	कन्नी	15
नेपाली	संवत : 2076	आश्विन	15
चैत्रादि	संवत : 2076	आश्विन	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2076	आश्विन	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्ति काल _____ : 13:54:59
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : स्वाति
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 14:20:33 घंटे
जन्म योग _____ : स्वाति
सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
योग समाप्ति काल _____ : 08:30:33 घंटे
जन्म योग _____ : वैधृति
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 13:54:59 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 37:13:08
भभोग _____ : 54:39:31
भोग्य दशा काल _____ : राहु 5 वर्ष 8 मा 8 दि

घात चक्र

मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

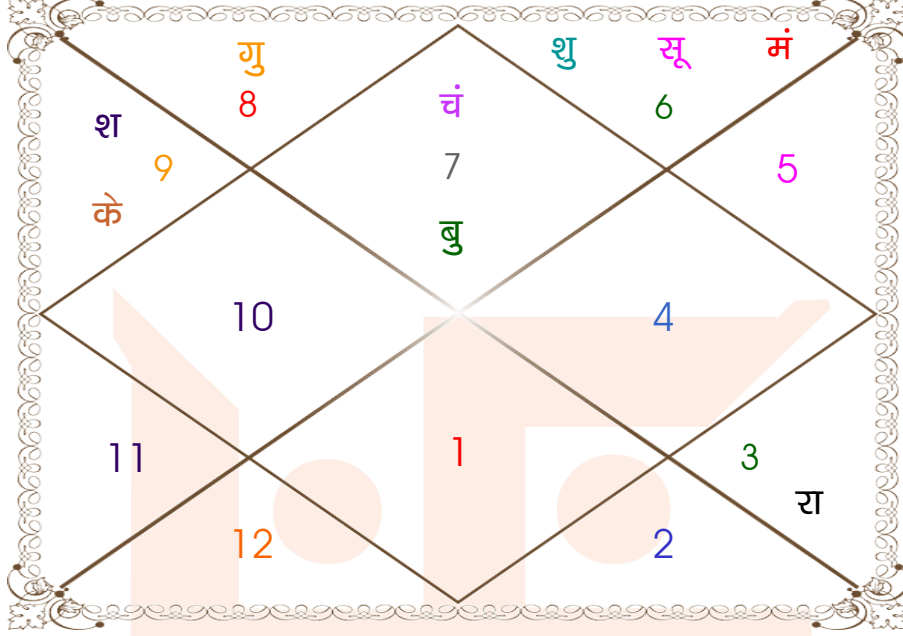
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

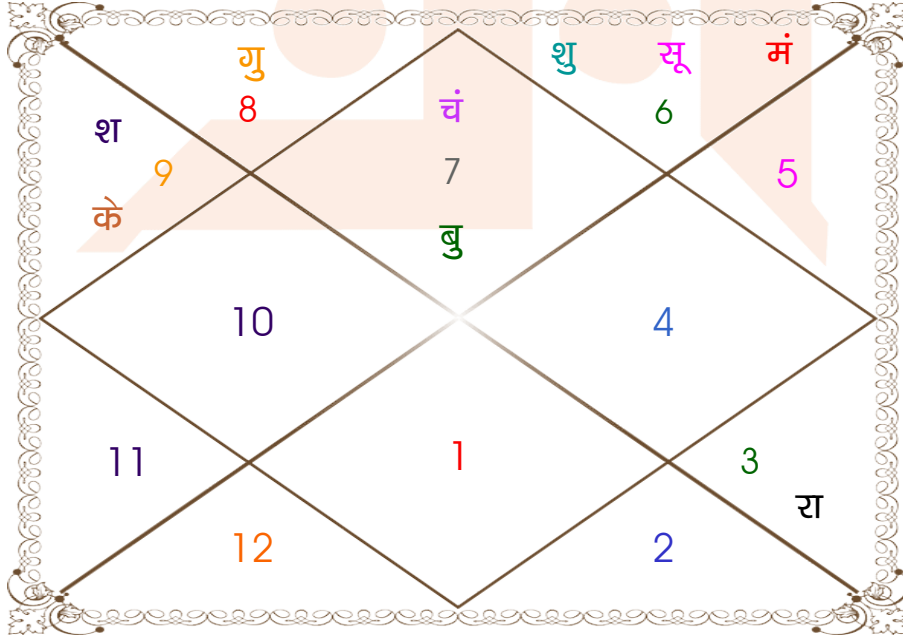
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			रा
के श	गु	बु ल चं	शु सू मं

लग्न कुंडली

रा			
शु सू मं	चं ल बु	गु	श के

विंशोत्तरी
राहु 5वर्ष 8मा 8दि
राहु

01/10/2019

11/06/2127

राहु	09/06/2025
गुरु	09/06/2041
शनि	09/06/2060
बुध	09/06/2077
केतु	09/06/2084
शुक्र	10/06/2104
सूर्य	11/06/2110
चन्द्र	10/06/2120
मंगल	11/06/2127

योगिनी
पिंगला 0वर्ष 7मा 17दि
भामरी

19/05/2023

19/05/2027

भामरी	29/10/2023
भद्रिका	19/05/2024
उत्का	17/01/2025
सिद्धा	28/10/2025
संकटा	18/09/2026
मंगला	29/10/2026
पिंगला	18/01/2027
धान्या	19/05/2027

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

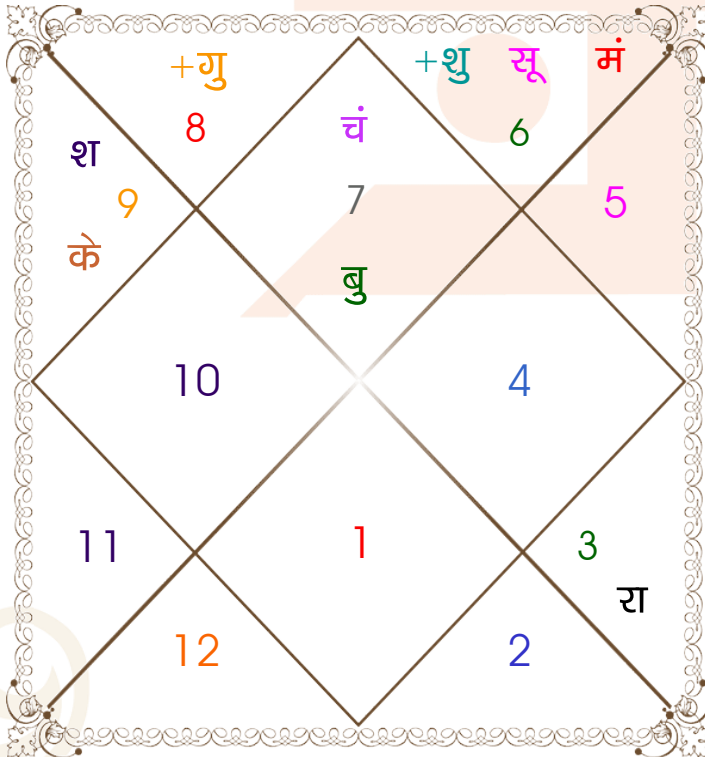
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	05:10:56	319:12:27	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	---
सूर्य			कन्या	13:28:31	00:58:59	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	राहु	सम राशि
चंद्र			तुला	15:47:05	14:34:05	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
मंगल		अ	कन्या	03:52:31	00:38:35	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	शत्रु राशि
बुध			तुला	02:36:23	01:27:35	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	केतु	मित्र राशि
गुरु			वृश्चि	24:03:53	00:08:16	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	मित्र राशि
शुक्र			कन्या	26:22:52	01:14:35	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	गुरु	नीच राशि
शनि			धनु	19:54:52	00:01:15	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
राहु	व		मिथु	19:21:19	00:09:13	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	उच्च राशि
केतु	व		धनु	19:21:19	00:09:13	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	उच्च राशि
हर्ष	व		मेष	11:32:31	00:02:05	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	---
नेप	व		कुंभ	22:37:32	00:01:31	पूर्वाभाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	---
प्लूटो	व		धनु	26:30:24	00:00:04	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	---
दशम भाव			कर्क	06:23:05	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	बुध	--

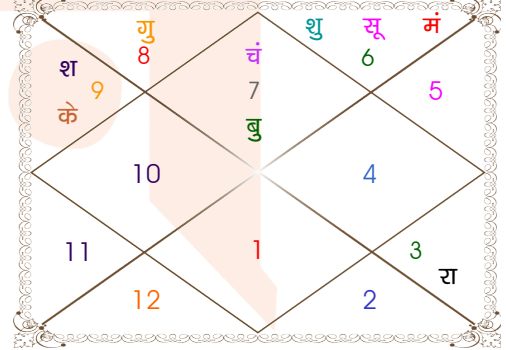
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:07:41

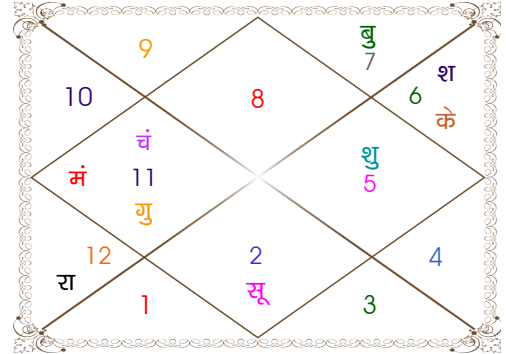
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 20:22:58	तुला 05:10:56
2	तुला 20:22:58	वृश्चिक 05:34:59
3	वृश्चिक 20:47:01	धनु 05:59:02
4	धनु 21:11:03	मकर 06:23:05
5	मकर 21:11:03	कुम्भ 05:59:02
6	कुम्भ 20:47:01	मीन 05:34:59
7	मीन 20:22:58	मेष 05:10:56
8	मेष 20:22:58	वृष 05:34:59
9	वृष 20:47:01	मिथुन 05:59:02
10	मिथुन 21:11:03	कर्क 06:23:05
11	कर्क 21:11:03	सिंह 05:59:02
12	सिंह 20:47:01	कन्या 05:34:59

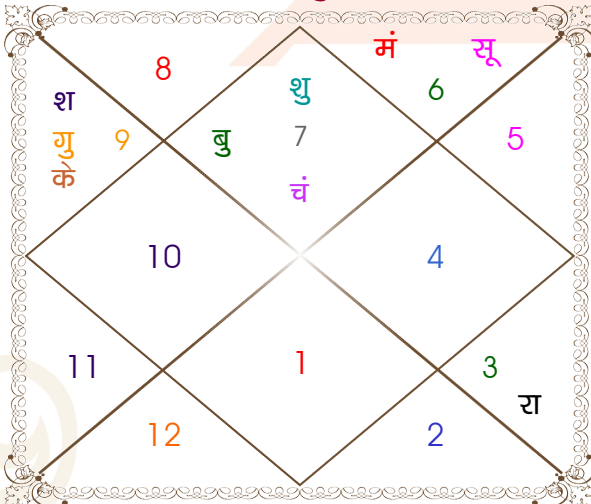
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	05:10:56
2	वृश्चिक	04:12:32
3	धनु	04:41:39
4	मकर	06:23:05
5	कुम्भ	08:19:48
6	मीन	08:28:13
7	मेष	05:10:56
8	वृष	04:12:32
9	मिथुन	04:41:39
10	कर्क	06:23:05
11	सिंह	08:19:48
12	कन्या	08:28:13

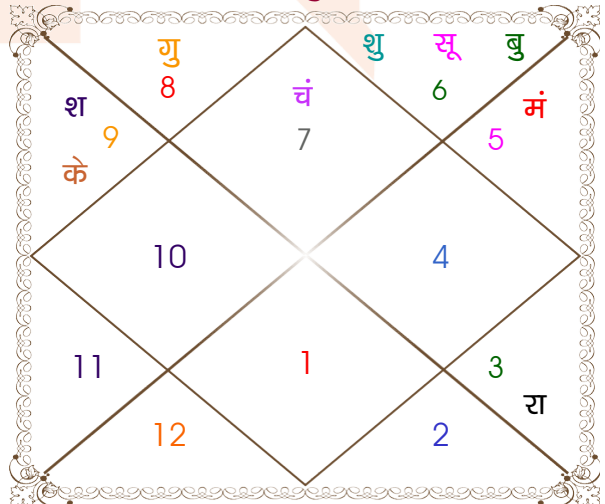
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 5 वर्ष 8 मास 8 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
01/10/2019	09/06/2025	09/06/2041	09/06/2060	09/06/2077
09/06/2025	09/06/2041	09/06/2060	09/06/2077	09/06/2084
00/00/0000	गुरु 28/07/2027	शनि 12/06/2044	बुध 06/11/2062	केतु 05/11/2077
00/00/0000	शनि 08/02/2030	बुध 20/02/2047	केतु 03/11/2063	शुक्र 06/01/2079
00/00/0000	बुध 16/05/2032	केतु 31/03/2048	शुक्र 03/09/2066	सूर्य 13/05/2079
00/00/0000	केतु 22/04/2033	शुक्र 01/06/2051	सूर्य 10/07/2067	चंद्र 12/12/2079
01/10/2019	शुक्र 22/12/2035	सूर्य 13/05/2052	चंद्र 09/12/2068	मंगल 10/05/2080
शुक्र 27/12/2021	सूर्य 09/10/2036	चंद्र 12/12/2053	मंगल 06/12/2069	राहु 28/05/2081
सूर्य 21/11/2022	चंद्र 08/02/2038	मंगल 21/01/2055	राहु 24/06/2072	गुरु 04/05/2082
चंद्र 22/05/2024	मंगल 15/01/2039	राहु 27/11/2057	गुरु 30/09/2074	शनि 13/06/2083
मंगल 09/06/2025	राहु 09/06/2041	गुरु 09/06/2060	शनि 09/06/2077	बुध 09/06/2084

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
09/06/2084	10/06/2104	11/06/2110	10/06/2120	11/06/2127
10/06/2104	11/06/2110	10/06/2120	11/06/2127	00/00/0000
शुक्र 10/10/2087	सूर्य 28/09/2104	चंद्र 11/04/2111	मंगल 06/11/2120	राहु 21/02/2130
सूर्य 09/10/2088	चंद्र 29/03/2105	मंगल 10/11/2111	राहु 25/11/2121	गुरु 17/07/2132
चंद्र 10/06/2090	मंगल 04/08/2105	राहु 11/05/2113	गुरु 01/11/2122	शनि 24/05/2135
मंगल 10/08/2091	राहु 29/06/2106	गुरु 10/09/2114	शनि 10/12/2123	बुध 10/12/2137
राहु 09/08/2094	गुरु 17/04/2107	शनि 10/04/2116	बुध 07/12/2124	केतु 28/12/2138
गुरु 09/04/2097	शनि 29/03/2108	बुध 10/09/2117	केतु 05/05/2125	शुक्र 02/10/2139
शनि 10/06/2100	बुध 02/02/2109	केतु 11/04/2118	शुक्र 05/07/2126	00/00/0000
बुध 11/04/2103	केतु 10/06/2109	शुक्र 10/12/2119	सूर्य 10/11/2126	00/00/0000
केतु 10/06/2104	शुक्र 11/06/2110	सूर्य 10/06/2120	चंद्र 11/06/2127	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 5 वर्ष 8 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु 09/06/2025 28/07/2027	गुरु - शनि 28/07/2027 08/02/2030	गुरु - बुध 08/02/2030 16/05/2032	गुरु - केतु 16/05/2032 22/04/2033	गुरु - शुक्र 22/04/2033 22/12/2035
गुरु 21/09/2025 शनि 23/01/2026 बुध 13/05/2026 केतु 27/06/2026 शुक्र 04/11/2026 सूर्य 13/12/2026 चंद्र 16/02/2027 मंगल 03/04/2027 राहु 28/07/2027	शनि 22/12/2027 बुध 01/05/2028 केतु 24/06/2028 शुक्र 25/11/2028 सूर्य 11/01/2029 चंद्र 29/03/2029 मंगल 22/05/2029 राहु 07/10/2029 गुरु 08/02/2030	बुध 05/06/2030 केतु 23/07/2030 शुक्र 08/12/2030 सूर्य 19/01/2031 चंद्र 29/03/2031 मंगल 16/05/2031 राहु 17/09/2031 गुरु 06/01/2032 शनि 16/05/2032	केतु 05/06/2032 शुक्र 31/07/2032 सूर्य 17/08/2032 चंद्र 15/09/2032 मंगल 05/10/2032 राहु 25/11/2032 गुरु 09/01/2033 शनि 04/03/2033 बुध 22/04/2033	शुक्र 01/10/2033 सूर्य 19/11/2033 चंद्र 08/02/2034 मंगल 06/04/2034 राहु 30/08/2034 गुरु 07/01/2035 शनि 10/06/2035 बुध 26/10/2035 केतु 22/12/2035
गुरु - सूर्य 22/12/2035 09/10/2036	गुरु - चंद्र 09/10/2036 08/02/2038	गुरु - मंगल 08/02/2038 15/01/2039	गुरु - राहु 15/01/2039 09/06/2041	शनि - शनि 09/06/2041 12/06/2044
सूर्य 05/01/2036 चंद्र 30/01/2036 मंगल 16/02/2036 राहु 30/03/2036 गुरु 08/05/2036 शनि 24/06/2036 बुध 04/08/2036 केतु 21/08/2036 शुक्र 09/10/2036	चंद्र 18/11/2036 मंगल 17/12/2036 राहु 28/02/2037 गुरु 04/05/2037 शनि 20/07/2037 बुध 27/09/2037 केतु 25/10/2037 शुक्र 14/01/2038 सूर्य 08/02/2038	मंगल 28/02/2038 राहु 20/04/2038 गुरु 04/06/2038 शनि 28/07/2038 बुध 15/09/2038 केतु 04/10/2038 शुक्र 30/11/2038 सूर्य 17/12/2038 चंद्र 15/01/2039	राहु 26/05/2039 गुरु 20/09/2039 शनि 06/02/2040 बुध 09/06/2040 केतु 30/07/2040 शुक्र 23/12/2040 सूर्य 05/02/2041 चंद्र 19/04/2041 मंगल 09/06/2041	शनि 30/11/2041 बुध 05/05/2042 केतु 08/07/2042 शुक्र 07/01/2043 सूर्य 03/03/2043 चंद्र 03/06/2043 मंगल 06/08/2043 राहु 18/01/2044 गुरु 12/06/2044
शनि - बुध 12/06/2044 20/02/2047	शनि - केतु 20/02/2047 31/03/2048	शनि - शुक्र 31/03/2048 01/06/2051	शनि - सूर्य 01/06/2051 13/05/2052	शनि - चंद्र 13/05/2052 12/12/2053
बुध 29/10/2044 केतु 26/12/2044 शुक्र 08/06/2045 सूर्य 27/07/2045 चंद्र 17/10/2045 मंगल 13/12/2045 राहु 09/05/2046 गुरु 18/09/2046 शनि 20/02/2047	केतु 16/03/2047 शुक्र 22/05/2047 सूर्य 12/06/2047 चंद्र 15/07/2047 मंगल 08/08/2047 राहु 08/10/2047 गुरु 01/12/2047 शनि 03/02/2048 बुध 31/03/2048	शुक्र 10/10/2048 सूर्य 07/12/2048 चंद्र 13/03/2049 मंगल 19/05/2049 राहु 09/11/2049 गुरु 12/04/2050 शनि 12/10/2050 बुध 25/03/2051 केतु 01/06/2051	सूर्य 18/06/2051 चंद्र 17/07/2051 मंगल 06/08/2051 राहु 27/09/2051 गुरु 12/11/2051 शनि 06/01/2052 बुध 25/02/2052 केतु 16/03/2052 शुक्र 13/05/2052	चंद्र 30/06/2052 मंगल 03/08/2052 राहु 28/10/2052 गुरु 13/01/2053 शनि 15/04/2053 बुध 06/07/2053 केतु 09/08/2053 शुक्र 13/11/2053 सूर्य 12/12/2053

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 5
शत्रु अंक	3, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

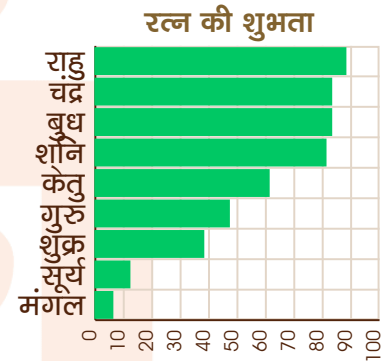
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
गोमेद	राहु	88%	भाग्योदय, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	83%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	83%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, कम खर्च
नीलम	शनि	81%	पराक्रम, सुख, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	61%	पराक्रम, धन
पुखराज	गुरु	47%	धन हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	38%	व्यय, दुर्घटना, रोग
माणिक्य	सूर्य	12%	व्यय, हानि
मूंगा	मंगल	6%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	09/06/2025	0%	70%	0%	83%	47%	50%	88%	100%	47%
गुरु	09/06/2041	25%	89%	19%	70%	61%	12%	81%	88%	61%
शनि	09/06/2060	0%	70%	0%	89%	47%	50%	94%	94%	47%
बुध	09/06/2077	25%	70%	6%	95%	47%	50%	81%	88%	61%
केतु	09/06/2084	0%	70%	19%	83%	47%	50%	69%	75%	73%
शुक्र	10/06/2104	0%	70%	6%	89%	47%	56%	88%	94%	67%
सूर्य	11/06/2110	38%	89%	19%	83%	55%	12%	69%	75%	47%
चंद्र	10/06/2120	25%	95%	6%	89%	47%	38%	81%	75%	47%
मंगल	11/06/2127	25%	89%	31%	70%	55%	38%	81%	75%	67%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100	
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

सुख
दुर्घटना से बचाव
कम खर्च
स्वास्थ्य
धन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है और नौकरी में आगे बढ़ने के प्रयास में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। परन्तु कालान्तर में व्यवधान स्वतः हट जाता है और कभी नौकरी में अवनति का भय होता है। व्यापार में थोड़ी बहुत रुकावट आकर नुकसान को जातक प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा कपट व्यवहार होने के कारण जातक को धन की क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर जातक आंशिक कष्ट पाता है और शासन की तरफ से भी थोड़ा बहुत मुसीबत आती है। अधिकारियों से कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जिस कारण जातक को न्यायालय से कभी जुर्माना या आंशिक रूप में सजा मिल सकती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी-कभी रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है। जिसमें थोड़ा बहुत धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। कालान्तर में पुनः वह सामान्य हो जाती है। जातक को चिन्ता परेशानी समय-समय पर लग जाती है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय बन जाता है तथा प्रायः भोग से अतृप्त रहती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। जातक कई प्रकार से धन्य करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है ।
- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र, शनि और राहु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी, आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवक्ता, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद्-बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान् होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(01/10/2019 - 09/06/2025)

राहु की महादशा 01/10/2019 को आरम्भ और 09/06/2025 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु की तृतीय भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपकी यात्रा, व्यय, कुछ आर्थिक लाभ, उत्तम शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि मिलेगी, दूर की यात्रा तथा आध्यात्मिकता की ओर झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में शक्ति तथा ऊर्जा होगी। आपको अधिक कार्य और श्रम नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपका शरीर कमजोर हो सकता है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक रोग, विषाणुजन्य समस्या, चर्मरोग, स्नायविक दुर्बलता और अंगों में कमजोरी आदि बीमारियाँ हो सकती हैं। थोड़ी सी सावधानी से इन बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप सक्रिय तथा आर्थिक अवसर की तलाश में रहेंगे। आपकी भौतिक समृद्धि अच्छी होगी और सारा सुख मिलेगा। आपको शक्ति और अधिकार मिलेगा। आपको सट्टे से सुन्दर लाभ मिलेगा। तृतीय भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको छोटी भाई-बहनों से लाभ मिलेगा, यात्रा और गमनागमन होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए तकनीकी तथा विज्ञान के क्षेत्र, कम्प्यूटर-विज्ञान, राजनीति, कूटनीतिक सेवा, अनुसन्धान, सरकारी सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, दवा, रसायन, बिजली के उपकरण, रत्न, सोना आदि का व्यापार, लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी अचानक पदोन्नति होगी और वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय, यात्रा और परिवर्तन हो सकता है। ये सब आखिरकार लाभदायक सिद्ध होंगे। दशा में प्रगति के साथ स्थित में सुधार आएगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा में आपको जीवन का सभी सुख मिलेगा। आपको भौतिक समृद्धि और सुख मिलेगा तथा जीवन सुखमय होगा। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको सम्पत्ति की प्राप्ति भी होगी। शनि की अन्तर्दशा में छोटी लाभदायक यात्रा और मंगल की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और अपनी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पसन्द की संस्था में पढ़ाई कर सकते हैं। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इन्जीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, सिविल इन्जीनियरिंग, विधि, दवा आदि के क्षेत्र में आपकी रुचि हो सकती है। आप में नेतृत्व गुण, साहस और दृढ़ता है। अपने आपके रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता है।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे समृद्ध होंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें सम्बंधियों तथा परिवार से लाभ मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी, उन्हें मामूली स्वास्थ्य समस्या और कर्मचारियों से लाभ मिलेगा। आपके पिता को धन, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और उनकी यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदार से लाभ, यात्रा और व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को आर्थिक-समृद्धि मिलेगी, उनके अच्छे मित्र होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, सम्पत्ति, यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, कार्यों में सफलता और जीवन का सुख मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी यात्रा तथा कुछ मामूली बाधा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपका विवाह होगा, साझेदारी से लाभ और जीविकोपार्जन में सफलता मिलेगी जबकि केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, दूर की यात्रा और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि हो सकती है। चंद्र की अन्तर्दशा में परिवर्तन और अचानक लाभ या हानि हो सकती है। मंगल की अन्तर्दशा में सन्तान से सुख मिलेगा।

**महादशा :- गुरु
(09/06/2025 - 09/06/2041)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 09/06/2025 को आरम्भ तथा 09/06/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। इस तरह वह भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। द्वितीय भाव सम्पत्ति, भाग्य, दायीं आँख, स्मरणशक्ति, कल्पना, जिह्वा, दाँत, दाढ़ी और पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है। गुरु एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। इसकी छठे, आठवें और दसवें भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर इसका शुभ प्रभाव है। अतः 16 वर्षों की यह दशा सुखमय और समृद्धिशाली होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और वहाँ से (दशम भाव के अतिरिक्त) छठे तथा 8वें भावों अर्थात् रोग और शत्रु के भावों तथा दीर्घायु के भावों पर इसकी दृष्टि के कारण आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और आप इस दशा के दौरान स्वस्थ रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और दसवें भाव (छठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) पर इसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त करेंगे और आराम

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

तथा विलासिता की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की द्वितीय अर्थात् धन-सम्पत्ति के भाव में स्थिति और वहाँ से (6ठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) दसवें अर्थात् व्यवसाय तथा जीवन चर्चा के भाव पर इसकी दृष्टि के कारण आप अपने व्यवसाय में प्रतिष्ठित होंगे। आप कवि, महान् लेखक, ज्योतिषी अथवा वैज्ञानिक हो सकते हैं। आप सफल, प्रतिष्ठित और भाग्यशाली होंगे। आप किसी से झगड़ा नहीं करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सद्भावपूर्ण रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और सहायक होंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी और सुशील होंगे। 16 वर्ष की इस दशा के दौरान आपको कोई पारिवारिक समस्या नहीं होगी और आप पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्ञान की भूख के कारण आप विभिन्न साहित्यों के अध्ययन में रत रहेंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(09/06/2025 - 28/07/2027)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/06/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/06/2025 को प्रारंभ होकर 28/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी; धन, संचित होगा। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। खुशियां मिलेंगी; किस्मत चमकेगी। उत्तम वस्त्र आदि से सुशोभित रहेंगे; सब सुविधाएं होंगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। मातहतों और किरायेदारों से लाभ हो सकता है। उत्तम नौकरी मिल सकती है; कार्यालय उत्तम रहेगा। कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है। आपके पिता को शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। माता धनी और सफल बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, खर्च, शत्रुओं पर विजय, अचल संपत्ति की प्राप्ति, धन और उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ उत्तम होगा; भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा; किस्मत चमकेगी। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित लाभ संभव है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान पर ध्यान दें, नेत्रों की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीला गुड़, पीले वस्त्र, हल्दी और पुस्तकें दान में दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(28/07/2027 - 08/02/2030)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 09/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/07/2027 को प्रारंभ होकर 08/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रोन्नति हो सकती है, धन का लाभ होगा, सेवक प्राप्त होंगे। भाइयों और मित्रों से लाभ होगा; शत्रुओं पर विजय होगी। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। परीक्षा में सफलता मिलेगी। सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। बुद्धि उत्तम रहेगी। दान धर्म में रुचि होगी। पर्दे के पीछे कार्य करने से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी धनी और भाग्यशाली होंगे। आपके पिता को साझेदारों से लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्रा हो सकती है। धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए शिक्षा, धन, उच्चपद, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनलाभ उत्तम होगा, सम्मान मिलेगा, अध्ययन में सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी, उच्चपद मिलेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर सफल रहेंगे, लाभ उत्तम होगा, कार्यालय सुविधासंपन्न रहेगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन से पूर्व गाय को रोटी दें।

